

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2012

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-I

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (अष्टकवर्ग)

1. किन्हीं दो का उत्तर दें :
अ. निम्नलिखित जन्मांग में बृहस्पति का प्रस्तारक और भिन्नाष्टक वर्ग बनाए:
जन्मतिथि: 9-8-1945, 11.49 सुबह, दिल्ली
लग्न $6S.28^{\circ}.14'$, सूर्य $3S.23^{\circ}.11'$, चन्द्रमा $4S.7^{\circ}.55'$, मंगल $1S.18^{\circ}.17'$,
बुध $4S.11^{\circ}.25'$, बृहस्पति $5S.3^{\circ}.47'$, शुक्र $2S.12^{\circ}.19'$, शनि $2S.25^{\circ}.30'$,
राहु $2S.15^{\circ}.36'$,
ब) त्रिकोण शोधन समझाइये।
स) ऊपर दिए हुए जन्मांग के अनुसार शनि का प्रस्तारक और भिन्नाष्टक वर्ग बनाए।
2. किन्हीं दो का उत्तर दें :
अ. जब ग्रह किसी राशि गोचर करता है तो फलादेश के लिए कक्षा के किन नियमों का प्रयोग किया जाता है।
आ. सर्वोष्टक वर्ग को ध्यान में रखते हुए बताए कि आप कैसे शनि की सादे सती का विषलेक्षण करेंगे?
इ. सर्वतोभद्रचक्र क्या है?
3. प्रश्न संख्या 1 में शनि का त्रिकोण एवं एकाधिपत्य शोधन की गणना करें।
4. बृहस्पति अष्टकवर्ग से आप किस प्रकार सत्तति के बारे में फलादेश करेंगे?
5. कारण समझाते हुए बताए कि निम्नलिखित वाक्य सही है अथवा गलत :
i) यदि सूर्य को 30-35 बिन्दु प्राप्त है व केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित है, तो जातक के पिता को धन की प्राप्ति होगी।
ii) शोधन के उपरान्त, यदि तुला में स्थित शुक्र का एक बिंदु हो तो, शुक्र जब तुला राशि में गोचर करेगा तब जातक को कठिनाइयाँ सहनी पड़ सकती है।
iii) बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में सिंह राशि में शनि स्थित है व वहां शोधन के पश्चात् शून्य बिन्दु हो तो जातक भाग्यवान होगा।
iv) एकाधिपत्य शोधन में यदि दानों राशियाँ रिक्त हैं व संख्या असमान है तो दोनों संख्याएँ हटा दी जाती हैं।
v) मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में, यदि मंगल (बिंदु 1) और शनि (बिंदु 3) एक दूसरे से षडाष्टक में हों, यह स्थिति दर्शाती है कि भाइयों से बिछुड़ना होगा।

भाग-II (प्रश्न ज्योतिष)

6. प्रश्नकर्ता ने हैदराबाद में ज्योतिषी से दिनांक 22.08.2012 को दोपहर 12.50 बजे पूछा -
i) महिला (प्रश्नकर्ता) एक मकान लेना चाहती है अतः क्या वो कार्तिक मास से पहले मकान खरीद पाएंगी अथवा नहीं? नीचे दी गई प्रश्नकुण्डली के आधार पर कारण बताते हुए उत्तर दीजिए :

लग्न-वृश्चिक $10^{\circ}29'$, सूर्य-सिंह $5^{\circ}34'$, चन्द्रमा-तुला $5^{\circ}37'$,
मंगल-तुला $5^{\circ}06'$, बुधा-कर्क $18^{\circ}31'$, बृहस्पति-वृष $19^{\circ}26'$,
शुक्र-मिथुन $19^{\circ}59'$, शनि-तुला $1^{\circ}20'$, राहु-वृश्चिक $6^{\circ}32'$

अ) प्रश्न कुण्डली की क्या सीमाएं हैं ?

इ) प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा का क्या योगदान है? कुण्डली (अ) में चन्द्रमा क्या दर्शाता है?

7. निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाने पर, ज्योतिष के रूप में आपको किन-किन नियमों, योगों भावों और ग्रहों का ध्यान रखना चाहिए?

(क) मैं कब आर्थिक समस्याओं से निकल पाऊँगा?

(ख) मैंने अपने मित्र को उधार दिया था और वो भी बिना किसी कागजी कार्यवाही के। अतः क्या मुझे से धन वापिस मिल जाएगा?

(ग) विवाह कब तक हो जाएगा?

8. निम्नलिखित योगों को उदाहरण द्वारा समझाए :

(अ) पूर्ण इत्थशाल योग (आ) इन्दूवर योग

(इ) रद् योग (ई) इशाराफ योग

9. किन्हीं दो पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए :

(क) जन्म कुण्डली और प्रश्न कुण्डली में क्या संबंध होता है?

(ख) प्रश्न शास्त्र में शकुन की क्या भूमिका होती है?

(ग) प्रश्न शास्त्र में प्रश्नकर्ता के लिए क्या नियम कहे गए हैं?

10. प्रश्न पूछने की तारीख है 18.10.2012, समय रात्रि 08:45 बजे, बेंगलूर में ग्रह स्थिति इस प्रकार है -

लग्न-वृष $16^{\circ}45'$, सूर्य-तुला $1^{\circ}36'$, चन्द्रमा-वृश्चिक $15^{\circ}05'$,

मंगल-वृश्चिक $14^{\circ}11'$, बुध-तुला $24^{\circ}16'$, बृहस्पति (व)-वृष 22°

शुक्र-सिंह $24^{\circ}03'$, शनि-तुला $7^{\circ}29'$, राहु-वृश्चिक $3^{\circ}29'$

(क) क्या प्रश्नकर्ता का अपनी पत्नी से विवाह-विच्छेद होगा अथवा नहीं?

(ख) क्या उसका दूसरा विवाह होगा? अगर हाँ तो कब?

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2012

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-III

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (आयुर्दाय)

1. नीचे दी गई कुण्डली के आधार पर पिण्डायु की गणना करें :-
जन्म तारीख 28.6.1921, समय 1.02 दोपहर में, स्थान-वारंगल
शनि की भोग्य दशा : 8वर्ष 08 महीने 17 दिन

लग्न/ग्रह	राशि	अंश	कला
लग्न	कन्या	24	48
सूर्य	मिथुन	13	16
चन्द्रमा	मीन	10	33
मंगल	मिथुन	13	33
बुध (व)	मिथुन	27	41
बृहस्पति	सिंह	20	06
शुक्र	मेष	27	40
शनि	सिंह	26	26
राहु	तुला	01	26
केतु	मेष	01	26

2. विस्तार से बताए कि मारक ग्रह क्या है? क्रमवार मारको का वर्णन करें।
3. बालरिष्ट क्या है? इनके योग भी बताएं।
4. इनमें से किन्हीं तीन पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए :-
अ. दिन मृत्यु
आ. गंडांत
इ. बालरिष्ट कब भंग हो सकता है?
ई. छिद्र दशा

5. अल्पायु, मध्यायु और पूर्णायु को जानने के क्या-क्या सामान्य नियम हैं?

भाग-II (चिकित्सा ज्योतिष)

6. 'सही' अथवा 'गलत' का चयन करें :
अ. नसों का कारक शनि है।
आ. शुक्र, कन्या राशि और 6 भाव, हृदय के कारक है।
इ. बृहस्पति यकृत (कलेजा) रोग प्रदान करता है।
ई. बली लग्नेश स्पष्ट दर्शाता है कि जातक रोग से पूर्णतया निकल जाएगा।
उ. मंगल और सूर्य वात दोष को दर्शाते हैं।
ऊ. सूर्य का लग्न में होना गंजापन देता है।
ए. अशुभ ग्रहों का केन्द्र में होना और शुभ ग्रहों का 3,6,11 में होना अच्छा

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2012

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-II

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (षड्बल)

- नीचे दिए हुए कुण्डली के आधार पर सभी ग्रहों के उच्च बल की गणना करें :-
लग्न-सिंह 16:14, सूर्य-वृष 04:40, चन्द्रमा-वृष 17:41, मंगल-मीन 23:04,
बुध-मेघ 12:18, बृहस्पति-वृष 16:22, शुक्र-मीन 22:34, शनि-कर्क 17:41, राहु-तुला
00:27 (19.05.1977, 01.08 दोपहर, देशांतर 78:33, अक्षांश 17:27)
- प्रश्न संख्या 1 में दी गई कुण्डली के आधार पर सभी ग्रहों के केन्द्र बल और द्रष्टाकोण बल की गणना कीजिये।
- षड्बल क्या है और इसकी उपयोगिता बताएँ।
- भावबल क्या है? भाव बल किन बलों से बनता है?
- इनमें से किन्हीं तीन पर संक्षिप्त पर टिप्पणी लिखिए :-
अ. इष्टफल और कष्टफल आ. सप्तवर्गीय बल
इ. नतोन्नत बल ई. पक्ष बल

भाग-II (भाव निर्णय)

- इनमें से किन्हीं दो का उत्तर दीजिये :-
i) अष्टम तथा द्वादश भावों के कारकत्वों की चर्चा करें।
ii) शनि के तीसरे, छठे, अष्टम और द्वादश भाव में होने वाले परिणामों की चर्चा करें।
iii) भावात् भावम् नियम से आप क्या समझते हैं?
 - प्रस्तुत जन्मांग का अध्ययन करते हुए दशम भाव के बारे में विचार करें। साथ ही जातक के व्यवसायिक स्थिति पर प्रकाश डालें।
जन्म की तारीख-27.09.1932, जन्म समय-12.00 (दोपहर), जन्म स्थान-लाहौर (पाकिस्तान)
- | लग्न/ग्रह | राशि | अंश | कला |
|-----------|---------|-----|-----|
| लग्न | वृश्चिक | 17 | 08 |
| सूर्य | कन्या | 11 | 00 |
| चन्द्रमा | सिंह | 01 | 32 |
| मंगल | कर्क | 10 | 57 |
| बुध | कन्या | 09 | 17 |
| बृहस्पति | सिंह | 17 | 11 |
| शुक्र | कर्क | 26 | 06 |
| शनि (व) | मकर | 05 | 13 |
| राहु | कुम्भ | 24 | 09 |
| केतु | सिंह | 24 | 09 |
- कृपया विस्तार से समझाए
i) नीचभंग राजयोग ii) केन्द्राधिपत्य दोष
 - सप्तम भाव के क्या कारकत्व होंगे? आप मंगल दोल का आंकलन किस प्रकार करेंगे? विस्तार से बताएँ।
 - जातक की सन्तति को जानने के लिए बीज स्फुट और क्षेत्र स्फुट का क्या योगदान है? इस जानकारी का किस प्रकार प्रयोग किया जाता है?

स्वास्थ्य देता है ।

ऐ. रोग के उपरांत यदि शुभ ग्रह की दशा हो तो स्वास्थ्य लाभ दिखता है ।

ओ. यदि चन्द्रमा पीड़ित हो तो अधिकतर मानसिक विकार होता है।

औ. मिथुन, तुला व कुम्भ श्रवास व धसन तन्त्र को दर्शाते हैं।

7. वक्री ग्रहों का चितित्सा ज्योतिष में क्या योगदान है? उदाहरण के द्वारा स्पष्ट कीजिये।

8. इनमें से किन्हीं चार के योगों को बताए :

अ. गुर्वे का रोग

आ. गटिया

इ. बवासीर

ई. दुर्घटना

उ. मधुमेह

ऊ. लकवा

9. नीचे दी हुई कुण्डली एक जातक की है जिसका पिताशय को निकालने की सर्जरी (चीर-फाड़) की गई क्योंकि पित्त की थैली में, चन्द्रमा-बुध-बृहस्पति की दशा में पत्थरी बन गई थी। कृपा बताएँ कि यह सब इस कुण्डली से कैसे देखेंगे?

जन्म की तारीख : 28.06.1959 समय : शाम 06.50 बजे, स्थान :

शिमला (हिमाचल प्रदेश) :

बुधा की भोग्य दशा : 12 वर्ष 11 महीने 01 दिन

लग्न/ग्रह	राशि	अंश	कला
लग्न	धनु	04	44
सूर्य	मिथुन	12	48
चन्द्रमा	मीन	19	52
मंगल	कर्क	23	15
बुध	कर्क	06	31
बृहस्पति (व)	तुला	29	33
शुक्र	कर्क	28	06
शनि (व)	धनु	10	18
राहु	कन्या	15	37
केतु	मीन	15	37

10. इनमें से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :-

अ. चिकित्सा ज्योतिष में त्रिक भाव का क्या महत्व है?

आ. चिकित्सा ज्योतिष में काल पुरुष के महत्व को समझाए।

इ. 3, 6, 9 और 11 भाव कुण्डली में किन-किन अंगों को दर्शाते हैं तथा इन भावों के कारक कौन से ग्रह हैं?

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2012

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-IV

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (दशा पद्धति)

1. किन्हीं दो पर लिखिए :
अ) दशा पद्धति का क्या महत्व है?
आ) विंशोत्तरी दशा प्रणाली में सूर्य की महादशा में सामान्य परिणामों की व्याख्या कीजिए।
इ) किसी घटना के समय निर्धारण में प्रत्यंतर दशाधिनाथ की भूमिका की विवेचना कीजिए।
2. अ. नीचे दी गई कुण्डली के आधार पर सितम्बर 2009 के आरंभ में होने वाली योगिनी दशा की गणना कीजिए।
जन्म तिथि : 25.04.1982 समय रात्रि के 2 घंटे 20 मिनट, स्थान 12रा59:77पू35, लग्न-कुम्भ 7°:01', सूर्य-मेष 10°:43', चन्द्रमा-मेष 24°:41', मंगल(व)-कन्या 8°:38', बुध-मेष 24°:55', बृहस्पति(व)-तुला 12°:00', शुक्र-कुम्भ 25°:45', शनि(व)-कन्या 24°:07', राहु-मिथुन 22°:24'
आ. उपरोक्त कुण्डली में सितम्बर 2009 के पश्चात् दो योगिनी दशाओं के समय जातक के जीवन में क्या-क्या घटनाएँ हो सकती हैं?
3. नीचे दिए गए कुण्डली के आधार पर बताए कि शुक्र की महादशा (20 वर्ष) में जातक के लिए क्या-क्या फलादेश होंगे?
दिनांक 14.12.1924 समय रात्रि 10.00 बजे, स्थान 34रा01, 71पू34, जन्मकालीन शनि भोग्यदशा: 14 वर्ष 8 महीने 15 दिन, कर्क 28°:39', सूर्य-वृश्चिक 29°:37', चन्द्रमा-कर्क 6°:20', मंगल-मीन 4°:21', बुध-धनु 19°:18', बृहस्पति-धनु 6°:22', शुक्र-तुला 28°:20', शनि-तुला 17°:40', राहु-कर्क 21°:69'.
4. किन्हीं दो पर लिखें :
(अ) विदेश यात्रा (आ) संतान जन्म (इ) व्यवसाय में परिवर्तन
5. निम्न का उत्तर दीजिए:
(अ) शनि की महादशा के सामान्य परिणाम क्या होंगे?
(आ) यदि कर्क व सिंह लग्न के जातक का सूर्य और चन्द्रमा तीसरे भाव में स्थित हो तो सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अंतर्दशा के क्या परिणाम होंगे?

भाग-II (गोचर)

6. किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :
अ) शनि के पर्याप के परिणाम पर व्याख्या कीजिये ।
आ) वेध तथा विपरीत वेध की व्याख्या कीजिये ।
इ) लता से आप क्या समझते हैं?
7. कृपया उत्तर दीजिए :
अ) सप्तशलाका चक्र की उपयोगिता बताईये ।
आ) साढ़ेसती से आप क्या समझते हैं? विस्तार से समझाए ।
8. मंगल के गोचर का सभी भावों पर क्या-क्या सामान्य प्रभाव होगा?
9. नक्षत्र अंगफल को उदाहरण के द्वारा समझाइये ।
10. गोचर के परिणाम सामान्यतः हम जन्म राशि से देखते हैं । क्या आप इस बात से सहमत हैं? उदाहरण के द्वारा आप अपना उत्तर स्पष्ट कीजिये ।

पुरुष: जन्म तिथि : 12-12-1982 समय : 3.15 दोपहर, जन्म स्थान : दिल्ली, जन्म के समय बृहस्पति दशा: 12 वर्ष, 02 महीने, 01 दिन, वर्तमान में शनि में बृहस्पति की अंतर्दशा : 29-7-2011 से 09-02-2014,

कन्या			पुरुष		
ग्रह	राशि	भोगांश	ग्रह	राशि	भोगांश
लग्न	कन्या	28-20	लग्न	मेष	22-29
सूर्य	कर्क	02-38	सूर्य	वृश्चिक	26-25
चन्द्रमा	धनु	02-10	चन्द्रमा	तुला	23-12
मंगल(व)	धनु	21-25	मंगल	मकर	08-04
बुध (व)	कर्क	09-29	बुध	धनु	08-49
बृहस्पति(व)	कुम्भ	20-07	बृहस्पति	वृश्चिक	03-33
शुक्र	सिंह	14-54	शुक्र	धनु	05-50
शनि (व)	वृश्चिक	09-40	शनि	तुला	07-41
राहु	मेष	01-46	राहु	मिथुन	10-40
केतु	तुला	01-46	केतु	धनु	10-40

7. विवाह काल निर्णय के लिए किसी एक सिद्धान्त पर विस्तार से बताएं। प्रश्न संख्या 6 के आधार पर दानों जातकों के लिए विवाह काल निर्णय करें।
8. नीचे दी गई कुण्डली के आधार पर जातक की वैवाहिक जीवन पर प्रकाश डालें।
जन्म तिथि : 08-02-1984, समय 03.30 रात्रि, जन्म स्थान : दिल्ली, महिला, जन्म के समय की भोग्य दशा : बुधा: 0 वर्ष 11 महीने और 21 दिन
लग्न : वृश्चिक 28-00, सूर्य: मकर 24-42, चन्द्रमा : मीन 29-14,
मंगल : तुला 19-52, बुध : मकर 04-41, बृहस्पति : धनु 10-19,
शुक्र : धनु 22-29, शनि : तुला 22-31, राहु : वृष 19-41, केतु: वृश्चिक 19-41
9. किन्हीं तीन पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए :
क) नवांश की विवाह मेलापक में उपयोगिता
ख) अशुभ ग्रहों का सप्तम भाव पर प्रभाव
ग) विवाह और मंगल ग्रह की दशा
घ) बहु विवाह (एक से अधिक विवाह) के योगों का वर्णन
ड) दशा संधि एवं विवाह
10. विस्तारपूर्वक बताइये कि नीचे दी गई जातक की कुण्डली के अनुसार वैवाहिक जीवन सुखद है अथवा नहीं -
पुरुष : जन्म तिथि 26-09-1975, समय 9.12 रात्रि, जन्म स्थान : कोलकाता जन्म के समय चन्द्रमा की भोग्य दशा : 4 वर्ष 3 महीने 21 दिन,
लग्न: वृष 16-26, सूर्य: कन्या 09-24, चन्द्रमा: वृष 17-35, मंगल: वृष 29-21
बुध: तुला 00-53, बृहस्पति (व) : मीन 28:20, शुक्र: सिंह 03-16
शनि: कर्क 07-18, राहु: तुला 29-20, केतु: मेष 29-20

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2012

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-V

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। हर एक भाग में से अनिवार्य प्रश्नों के अलावा कम से कम एक प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य है। सब प्रश्नों का अंक समान है। भाग एक का उत्तर जैमिनीय आधार पर एवं भाग दो पराशरी सिद्धान्त के अनुसार उत्तर देना है।

भाग-I (जैमिनी ज्योतिष)

1. जन्म तिथि: 2-11-1938, जन्म समय : 04.30 सांय, जन्म स्थान: 29°53', 71°18', राहु विंशोत्तरी भोग्य दशा : 13 वर्ष 6 महीने 21 दिन, पुरुष लग्न: मीन 17.37, सूर्य: तुला 16-21, चन्द्रमा: कुम्भ 09-58, मंगल: कन्या 12-09, बुध: वृश्चिक 00-18, बृहस्पति: मकर 29-43, शुक्र(व): वृश्चिक 11-46, शनि(व): मीन 19-43, राहु: तुला 24-49, केतु: मेष 24-49
क) घर दशा की गणना करिये।

ख) जातक के व्यवसाय पर चर्चा किजिए।

2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखें :

- आत्मकारक और सूर्य।
- ग्रहबल की गणना की विधि।
- वैवाहिक जीवन में दारा पद की भूमिका।

3. सही अथवा गलत वाक्य बताईये :-

- यदि सूर्य और शुक्र के द्वारा कारकांश दृष्ट हो तो जातक सरकारी नौकरी में होता है।
- कारकांश से चतुर्थ भाव में यदि उच्च का शुक्र हो तो जातक के पास राजसिक निवास होता है।
- चन्द्र यदि कारकांश में शुक्र की राशि में हो तो जातक औषधि विक्रेता होता है।
- यदि शनि कारकांश से सप्तम भाव में स्थित हो तो जातक की पत्नी की उम्र जातक से अधिक होगी।
- यदि कारकांश तुला हो तो जातक व्यापारी होगा।
- यदि केतु और बृहस्पति कारकांश में हो तो जातक शिव-भक्त होगा।
- यदि राहु कारकांश में हो तो जातक चोर या धनुषधारी हो सकता है।
- धनु की दशा में जातक का मान भंग हो सकता है।
- यदि पूर्णिमा का चन्द्रमा और शुभ कारकांश में हो तो जातक विद्यादान के द्वारा अपनी आजीविका चलाता है।
- यदि बली शनि कारकांश में हो तो जातक अपने गाँव में प्रसिद्ध होता है।

4. प्रश्न 1 में दी गई कुण्डली के आधार पर जैमिनी सिद्धान्त के द्वारा जातक की आयु की गणना करें।

5. फलादेश में उपपद की उपयोगिता के बारे में चर्चा करिये।

भाग-II (विवाह एवं मेलापक)

6. नीचे दिए गए कुण्डली का मिलान कीजिये :

कन्या: जन्म तिथि 19-07-1986, समय 12.00 दोपहर, जन्म स्थान: कानपुर, जन्म के समय केतु दशा: 5 वर्ष 10 महीने 16 दिन, वर्तमान में सूर्य में चन्द्रमा की अंतर्दशा: 16-09-2012 से 17-3-2013.

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2012

प्रश्न पत्र-VI

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (फलादेश की मिश्रित एवं उच्च तकनीक)

- नीचे दी गई कुण्डली का अध्ययन करके निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए:
क) जातक का व्यवसाय
ख) क्या माता/पिता और जातक का व्यवसाय समान है?
महिल: जन्मतिथि 10.10.1954 समय: 11 बजे सुबह, जन्म स्थान : चेन्नई,
बृहस्पति की जन्म के समय भोग्य दशा : 9 वर्ष 6 महीने 14 दिन
लग्न:धनु 02-27, सूर्य:कन्या 23-09, चन्द्रमा:कुम्भ 25-23, मंगल:धनु 29-41,
बुध:तुला 18-05, बृहस्पति:कर्क 04-28, शुक्र:वृश्चिक 02-39, शनि:तुला
15-48, राहु:धनु 16-23, केतु:मिथुन 16-23
- कृपया निम्न विषयों पर पाँच-पाँच ज्योतिषीय योग बताईये:
अ. उच्च शिक्षा, आ. भू-संपत्ति, इ. सफल वैवाहिक जीवन
- नीचे दी गई कुण्डली के अनुसार चतुर्विंशति कुण्डली बनाए एवं जातक की शैक्षिक प्रगति की विवेचना करें -
जन्मतिथि: 23.10.1973, समय: सुबह 4.30 बजे, जन्म स्थान : दिल्ली, सूर्य
की जन्म के समय भोग्यदशा: 5 वर्ष 8महीने, 23 दिन
लग्न:कन्या 09-31, सूर्य:तुला 05-54, चन्द्रमा:सिंह 27-17, मंगल(व):मेष
08-48, बुध:तुला 29-56, बृहस्पति:मकर 09-45, शुक्र:वृश्चिक 21-44,
शनि:मिथुन 11-13, राहु:धनु 07-11, केतु:मिथुन 07-11
- निम्न के लिए दशाश कुण्डली बनाइये और बताए कि जातक अपने व्यवसाय में सफल होगा कि नहीं? क्या वो व्यापार में है अथवा नौकरी करता है?
जन्मतिथि : 12.03.1947 समय : 09.51 घंटे जन्म स्थान 42°19' एवं 83
पं. 2सूर्य की शनि के समय भोग्य दशा : 17 वर्ष 4 महीने 9 दिन, पुरुष
लग्न:वृष 07-54 सूर्य:कुम्भ 28-05, चन्द्रमा:वृश्चिक 04-29, मंगल:कुम्भ 13-08
बुध(व):कुम्भ 20-48, बृहस्पति:वृश्चिक 04-26, शुक्र:मकर 15-26, शनि(व):कर्क
9-16, राहु:वृष 12-22, केतु:वृश्चिक 12-22
- प्रश्न संख्या 1 में दी गई कुण्डली के सन्दर्भ में विवाहित जीवन पर प्रकाश डालें।

भाग-II (ज्योतिषीय मौसम एवं मेदनीय ज्योतिष)

- वर्षश चुनने के नियम समझाए। सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति के वर्षश होने के क्या फल होते हैं।
- सप्तनाडी चक्र क्या है? मेदिनीय ज्योतिष में इसकी उपयोगिता समझाए।
- संक्षिप्त में टिप्पणी करें :
अ. मेदिनीय ज्योतिष में चतुर्थ भाव के कारकत्व
आ. हर वर्ष 23 जून के आस पास सूर्य की मिथुन राशि में प्रवेश होने का महत्व
इ. दशम भाव में ग्रहण के कारण होने वाले परिणाम
- भूकंप के लिए दिए गए ज्योतिष योगों पर चर्चा करें।
- नीचे दिए गए ग्रहों की संधि का मेदिनीय ज्योतिष के अनुसार क्या प्रभाव होते हैं:
अ. शनि और बृहस्पति, आ. मंगल और शनि, इ. शनि और यूरेनस